1) जागो बंसीवारे ललना !
जागो मोरे प्यारे !
रजनी बीती , भोर भयो है , घर – घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत , सुनियत हैं कंगना के झनकारे ।।
उठो लालजी ! भोर भयो है , सुर – नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल – बाल सब करत कुलाहल , जय – जय सबद उचारै ।।
माखन – रोटी हाथ मँह लीनी , गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर , सरण आयाँ को तारै ।।

शब्दार्थ :-

बंसीवारे –श्री कृष्ण , कान्हा
ललना – पुत्र
रजनी – रात्रि
बीतना – बीत जाना
भोर – प्रातःकाल , तड़के
किंवारे – दरवाजे
गोपी – गोपियाँ , सखियाँ
मथत – मथना , दूध या दही को मथानी आदि से बिलोना
सुनियत – सुनाई देते हैं
कंगना – कंगन
झनकारे – झंकार , खनखनाहट
लालजी – दुलारे , प्यारे
सुर – देवता
ठाढ़े – खड़े होना
द्वारे – दरवाजे पर
ग्वाल – बाल – ग्वालों के बच्चे
करत – कर रहे हैं
कुलाहल – शोर
सबद – सभी
उचारै – उच्चारण करना
लीनी – लिए हुए
गउवन – गाय
रखवारे – रक्षा करने वाले
गिरधर – पहाड़ उठाने वाले
नागर – नागरिक
सरण – धीरे – धीरे आगे बढ़ना या चलना
आयाँ – आने वाले
तारै – उद्धार करना , कल्याण करना

व्याख्या – इस पद में कवियत्री मीरा बाई वर्णन करती हैं कि यशोदा माता कान्हा जी को सुबह उठाते हुए कहती हैं कि बाँसुरी धारण करने वाले मेरे प्यारे पुत्र अर्थात कान्हा अब जाग जाओ। रात अब बीत गयी है और सुबह हो चुकी है। सभी लोगों ने अपने – अपने घरों के दरवाजे खोल दिए हैं। सभी गोपियाँ दही को मथकर

मक्खन निकाल रही हैं और दही मथते हुए उनके कंगनों में खनखनाहट हो रही है। यशोदा माता बड़े प्यार से कान्हा जी को उठाते हुए कहती हैं कि मेरे दुलारे अब उठ जाओ। सुबह हो गई है और हमारे दरवाज़े पर देवता और सभी मनुष्य तुम्हारे दर्शन करने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। तुम्हारे सभी ग्वाल – मित्र तुम्हारे साथ खेलने के किए शोर मचा रहे हैं और सभी तुम्हारी जय – जयकार कर रहे हैं। वो सब हाथ में मक्खन और रोटी लिए , गौ रक्षक अर्थात तुम्हारा गाय चराने जाने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। कवियत्री मीरा बाई कहती हैं कि उनके प्रभु ने जिस तरह सभी नगरवासियों की रक्षा के लिए पर्वत को धारण किया था उसी तरह जो कोई भी उनकी शरण में जाता है वे सभी का उद्धार करते हैं।